## पद ५७ (अष्टक)

श्रीकरनखा कोटिचंद्रिका। जेंवि शोभती ग्रंथ चंद्रिका। कोमलांगुली पाद पद्मिका। मानसी सदा ध्यायि माणिका।।१।। जानु जाह्नवी जंघ मानवी। अंक हीनवी अर्क हीनवी। लाजवी कटी कारसिंहिका। मानसी सदा ध्यायि माणिका।।२।। निम्ननाभिका त्रिवलि शोभिका। पीनवक्षका श्रीवत्सलक्ष्मका। जानु हस्तका कंबुकंठका। मानसी सदा ध्यायि माणिका।।३।। मंदहास्यका सरळ नासिका। भालपट्टिका शोभितालका। दिधमधुपयामृतादिस्नातका। मानसी सदा ध्यायि माणिका।।४।। शुद्ध न्हाउनी केशधूपिका। केशरांचिता गंधचर्चका। पीतपटकटीं ब्रह्मधारका। मानसी सदा ध्यायि माणिका।।५।। ठेविसी करीं कामधेनु ही। सेवुनी प्रिया तांबुलासहि। सर्वभूषणा पूर्णभूषका। मानसी सदा ध्यायि माणिका ।।६।। मुगुट मस्तकीं कंठिं कौस्तुभा । मेखला कटीं मुद्रिका शुभा। कर्णि कुंडले पादरंजिका। मानसी सदा ध्यायि माणिका।।७।। भुवनसुंदरा श्रीमनोहरा। भक्तकामना पुरविसी त्वरा। ध्यानकारका ब्रह्मरूपका। मानसी सदा ध्यायि माणिका।।८।।